प्रतिभाशाली महिलाएं ही ... समृद्ध देशों की पहचान

'हुनर' ईश्वर का मिला उपहार है जो छिपा है, हम सब के भीतर .. सिर्फ जरूरत है अपने अन्दर झाँक कर अपने हुनर को सामाजिक ढांचे में उतार कर दुनिया के समक्ष अपनी प्रतिभा से रूबरू करवाने की । हर हुनरमंद को अपनी क्षमता अनुसार इसे तराशने का कार्य और कौशल को निखारना भी काफी हद तक उसी की मेहनत पर निर्भर रहता है।

दरअसल एक सच्चा हुनरमंद वही है जिसे खुद पर विश्वास रखे और हर चुनौती का सामना करते हुए मंजिल पर पहुंचने का रास्ते स्वयं बनाए। यह जरूरी नहीं है कि आपकी प्रतिभा के पीछे बड़ी डिग्रियों का योगदान रहे। देश के हर कोने में अनेक उदाहरण मौजूद है। जिन्होंने अपने हुनर को न केवल अपनी आजीविका का साधन बनाये हुए है। बल्कि उनके कार्य कौशल को एक मिसाल के तौर पर देखा जाता है। समाज में उनका हुनर उनकी शख़्सियत को पहचान दिलाता है। ऐसे अनेक प्रतिभाशाली महिलाएँ हमारे देश में मौजूद है। जिन्होंने अपने क्षेत्रों में सफलता प्राप्त की है।

वर्ष 2021 के ओलिंपिक खेलों में भारतीय महिलाओं ने अपने हुनर का अद्भुत प्रदर्शन किया। परदेश में देश का परचम लहरा कर देश को गौरवान्वित कराया। यह तथ्य इसकी पुष्टि भी करता है कि महिलाओं में पुरुषों से अधिक हुनर शक्ति होती है। जमीन से लेकर अंतरिक्ष तक के सफर में दर्ज अपनी पहचान बनाने में सफल रही है। यही नहीं वह अपने जीवन घर-परिवार में उत्पन्न हर परिस्थितियों का सामना अपने हुनर से बड़ी सशक्तता से निभा लिया करती है। हर देश की महिलाओं में समाज में बदलाव लाने का प्रतिभा क्षमता उन्हें विशेष रूप से अलग पहचान देती है। कहा जाता है कि महिलाओं में इंसानों को परखने का हुनर भी पुरुषों से बेहतर होता है।

भारत दुनिया के समृद्ध संसाधनों देशों में एक है। और जब जिक्र हो 'हाथों के हुनर' अर्थात हाथों से की गईं शिल्पकारी या कारीगरी को तो देश में प्रतिभा की कमी नहीं है। देश सौभाग्यशाली है जिसके यहां अत्यंत कुशल कारागार मौजूद है। उनकी कारीगरी और विशेष हो जाती है जब वे उपलब्ध सीमित सुविधाओं व सरल उपकरणों की मदद से विभिन्न प्राकृतिक चीजें... जैसे कागज, लकड़ी, पत्थर, धातु व आदि से कलात्मक कृतियाँ का सृजन अपने हाथों के हुनर से कर रहे हैं।

ग्रामीण इलाकों में आज भी कारीगर पारंपरिक कला को रोजगार बनाकर अपनी जीविका कमाते हैं। उनकी कलाओं की चित्रकारी धार्मिक एवं सांस्कृतिक महत्व को रेखांकित करती है। तीज- त्यौहार पर महिलाएं पौराणिक कथाओं के आधार पर दीवारों या हाथ से बने पेपरों पर अद्भुत कलाकृतियों का वर्णन करती है। भारतीय शिल्पकला का क्षेत्र अत्यंत विशाल है। फिर वह चाहे रेशम एवं कालीन या चमड़ा, काष्ठ या जूट के समान पर की जाने वाली हस्तकलाओं की सुन्दर प्रस्तुति दुनिया भर प्रसिद्ध है...यही नहीं विभिन्न प्रकार की हस्तशिल्प बनाने के लिए भारत एक बहुत बड़ा विनिर्माण हब भी है।

देश की 'कुटीर उद्योग' इंडस्ट्रीज ने विदेशी बाजार में अपनी पहचान बनाई है । उत्तर में पर्वत तो पूर्व में बंगाल की खाड़ी पश्चिम में अरब सागर तथा दक्षिण में हिंद महासागर तक.. जिसमें बहुरंगी विविधता और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का भंडार भरा हुआ है। दरअसल देश का हर राज्य अपनी एक विशेष शिल्पकारी के साथ लेस है। उन कारीगरों ने अपनी विशेष पहचान न केवल देश में ही बल्कि विश्व भर में प्रसिद्ध है। देश का सबसे बड़ा राज्य उत्तर प्रदेश.. को हस्तकला के कलात्मक कार्यों में अधिक सम्पन्न राज्य की श्रेणी में रखकर आकलन किया जा सकता है जैसे चिकन वर्क हो या बनारसी या रामपुर का पैचवर्क या महिलाओं के सिंगार में अहम भूमिका निभाने वाली कांच की चूड़ियाँ बनाने का हुनर तो दूसरी ओर मुरादाबाद का कलात्मक पीतल के बर्तनों का कारोबार यही होता है। इस

समृद्ध शहर की शिल्पकारी में इंडो-इस्लामिक कला का अद्भुत संगम की झलक देखने को मिलती है। अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में इन हस्तशिल्प कला से बनी रचनात्मक वस्तुओं की मांग का बाजार हमेशा गर्म रहता है।

सही कहा है कि दुनिया में हर व्यक्ति के अन्दर कलाकार छुपा होता है किन्तु जिक्र सिर्फ उन्हीं का होता है.. जिनकी कलाकारी हमारे आंखों के सामने दिखती है। या फिर वे देश जो कि अपनी पारंपरिक कलाओं को आगे बढ़ाने की ओर तेजी से अग्रसर है। **उन्हीं में से एक देश संयुक्त अरब अमीरात अपनी सांस्कृतिक धरोहरों को संरक्षित करने के लिए हर प्रयास कर रहा है।** स्थानीय महिलाओं के हस्तशिल्प कौशल को जीवित रखने के लिए.. उन्हें आवश्यक सामग्री उपलब्ध कराने के लिए आर्थिक सुविधाएं प्रदान की जा रही है। दिलचस्प है कि आधुनिक पाठ्यक्रमों के माध्यम से हस्तकला निखारने पर भी जोर दिया जाता है।

क़सर अल हुसन 'हाउस ऑफ़ आर्टिस्ट' 'हाथों के हुनर' की पारंपरिक कला को देखने की रुचि रखने व्यक्तियों के लिए विशेष आकर्षण का केंद्र है। जहां रेगिस्तान से लेकर समुद्री तट तक के कारीगरों का कलात्मक व रचनात्मक शिल्पियों का प्रदर्शन किया गया है। देश संस्कृति की सदियों पुरानी स्थानीय कला शिल्प के पुनरुद्धार करने जोर देते हुए महत्वपूर्ण कलाकृतियों को संरक्षित करने की दिशा में यूएई सरकार जमीनी हकीकत पर हर सम्भव प्रयास कर रहा है।

अल-सदु- यह एक पारंपरिक अमरीती कपड़ा बुनाई कला है। इस कला को (आदिवासी) समाज की महिलाओं द्वारा बनाया जाता था। आज भी इस उत्कृष्ट हस्तशिल्प विद्या जो कि पारंपरिक प्रचलित बुनाई है। जिसे जीवित रखने के लिए सरल तकनीकी शिक्षा व मदद के साथ आज भी महिलाएँ अभ्यास करती है। इस जटिल बुनाई में ऊंटों के बाल और बकरियों और भेड़ों के फ़रो से ऊन के कंबल, कालीन, तकिये के अलावा तम्बू के कपड़े बनाए जाते हैं। घरेलू सामान और ऊंटों को सजाने के लिए भी तैयार किया जाता था। बेडौइन समुदाय में यह कला पीढ़ियों

से चल रही है। इस कला का 'हुनर' महिलाओं को सामाजिक पहचान भी दिलाता है।

अल-सदु प्रक्रिया में यार्न को प्राकृतिक रंगों का इस्तेमाल कर के बुना जाता है। यूनेस्को की सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने की सूची में अल-सदु हस्तकला के महत्व को रेखांकित कर के नाम दर्ज किया गया है।

टल्ली- यह एक जटिल पारंपरिक कढ़ाई कला है जो अमीराती महिलाओं के बीच पीढ़ियों से चल रही है। महिलाएं पारंपरिक वस्त्रों के कॉलर व आस्तीन आदि में सोने और चांदी के मिश्रण के साथ या रेशमी धागों का इस्तेमाल करके सजाने का काम करती है।

खोसो- इस पारंपरिक कला में खजूर के पेड़ की शाखाओं और पत्तियों के उपयोग से बुनाई की जाती है। इसके माध्यम से टोकरियां, फर्श की चटाई, (महफा) एक तरह का पंखा है। हाथों से बुने यह सामान देखने में बहुत रंगीन और सुन्दर लगते है। आज भी घरों की साज-सज्जा के लिए इस्तेमाल किया जाता है।

समुद्री शिल्प..का बाजार यूएई की अर्थव्यवस्था की रीढ़ की हड्डी रहा है। तेल मिलने से पहले इस क्षेत्र में स्थानीय लोग समुद्र से मछली पकड़ना और मोतियों की गोताखोरी करते थे। अत्यंत बहुमूल्य सीप को खोजने का काम तटीय समुदाय किया करता था। बाद में अरब की खाड़ी और हिंद महासागर में व्यापार के रास्ते खोलने और वाणिज्य बढ़ाने में इससे मदद मिली।

हर समृद्ध देश की तस्वीर के पीछे.. समय की जरूरत और सांस्कृतिक विरासत की प्राचीन कलात्मक गतिविधियों को संवारना, सीखना और संरक्षित रखने की ओर लगातार प्रयासों का अहम योगदान रहता है। महिलाओं के 'हुनर' में छुपा है.. हर देश की सफलता का राज।

गीतांजलि सक्सेना